ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-2 अंक : 25

सहयोग शुल्क : रु.1 | फरवरी : 2019

दिव्यांग सेतु

संपादक : - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

दिव्यांग पूर्व सैनिकों को गणतंत्र दिवस पर तोहफा पृष्ठ : ३

संस्था : मंथन दिव्यांग कन्या सेवा संकुल पृष्ठ : ६

'व्हीलचेयर मेरा सिंहासन है, और में रानी हूँ': विराली मोदी पृष्ठ : ८

निर्मला सीतारमण,
रक्षामंत्री, भारत मंत्रालय

दिव्यांग एक ताकत है, एक शक्ति है, एक विचारधारा है, देश का एक मनोबल है|

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

मूलतः दो तरह के लोग होते हैं. वो जो चीजें हासलि करते हैं, और वो जो जीजें हासलि करने का दावा करते हैं. पहले समूह में भीड़ कम होती है|

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

संपादकीय

अव्वल अव्वल की दोस्ती है अभी
इक ग़ज़ल है कि हो रही है अभी
मैं भी शहरे-वफ़ा में नौवारिद
वो भी रुक रुक के चल रही है अभी
मैं भी ऐसा कहाँ का ज़ूद शनास
वो भी लगता है सोचती है अभी
दिल की वारफ़्तगी है अपनी जगह
फिर भी कुछ एहतियात सी है अभी

- अहमद फ़राज़

एक जंगल था। इस वन के राजा शेर ने अपना वजीर एक नीतिवान हंस को बनाया हुआ था। हंस, शेर को आसपास की सारी गतिविधियों से अवगत करता रहता था।

उसी वन के पास एक गांव था। गांव में एक ब्राह्मण परिवार गरीबी में कठिनाई से जीवन व्यतीत कर रहा था। उसके मन में आया कि शहर में जाकर कुछ ऐसा काम किया जाए, जिससे घर की दशा में कुछ सुधार हो। ब्राह्मण उसी वन के पास पहुंचा, जहां वह शेर रहता था। वन के प्रवेशद्वार में प्रवेश करते ही ब्राह्मण ने अपनी व्यथा शेर के वजीर हंस को बताई। हंस ने शेर को उसकी सारी व्यथा बता दी। शेर को ब्राह्मण की कहानी सुनते ही दया आ गई और उन्होंने हंस को कुछ स्वर्ण आभूषण देकर ब्राह्मण के पास भेजा। हंस ने सोने के गहने उसको दिए। ब्राह्मण गहनों को लेकर खुशी-खुशी घर चला गया, लेकिन कुछ दिनों के बाद वह धन खत्म हो गया।

ब्राह्मण फिर से वन के प्रवेशद्वार पर पहुंच गया, लेकिन इस समय वन का परिदृश्य बदल चुका था। हंस मर गया था और उसकी जगह कौए ने ले ली थी।

वह दहाड़ मारता हुआ तुरंत वहां पहुंचा और उसने देखते ही ब्राह्मण को पहचान लिया और कहा, 'यह तो वही ब्राह्मण है जिसको मैने कभी सोने के आभूषण दिए थे।' शेर ने उससे कहा, 'महाराज अब आप यहां से लौट जाइए, क्योंकि हंस मर चुका है और कौआ वजीर बन गया है। अब कुछ भी हो सकता है। शेर बोला,

हंस भए सो मगर गए, कागा भए सुजान।
जा ब्राह्मण घर आपने, सिंह किसके मेहमान।

इस प्रकार शेर ने इन्सान को मेहनत की महत्ता सिखाई।

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

फरवरी : 2019, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 03 अंक : 1

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

079 26405200

निर्मला सीतारमण,
रक्षामंत्री, भारत मंत्रालय

दिव्यांग पूर्व सैनिकों को गणतंत्र दिवस पर तोहफा, बढ़ाया गया न्यूनतम पेंशन

पूर्व दिव्यांग सैनिकों को पेंशन के रूप में प्रति माह १८ हजार रूपये दिए जायेंगे

रक्षा मंत्रालय ने गणतंत्र दिवस के मौके पर देश के पूर्व सैनिकों को बड़ा तोहफा देने का ऐलान किया है। मंत्रालय की तरफ से जारी एक बयान में कहा गया है कि शारीरिक रूप से अक्षम यानी दिव्यांग पूर्व सैन्यकर्मियों को पेंशन के तौर पर हर महीने १८ हजार रुपए दिए जाएंगे। पूर्व दिव्यांग सैन्यकर्मियों को यह पेंशन 1 फरवरी, 2016 से ही दिया जाएगा। रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने नए पेंशन पर अपनी मुहर लगा दी है।

बता दें कि इससे पहले सातवें वेतन आयोग ने दिव्यांग सैनिकों के पेंशन के लिए स्लैब-बेस्ड सिस्टम अपनाने का सुझाव दिया था। इस सिस्टम से कई पूर्व सैनिक नाराज हो गए थे। स्लैब-बेस्ट सिस्टम अपनाने को लेकर सरकार की काफी आलोचना हुई थी और यह मामला Anomaly Committee को भेज दिया गया। अब सरकार ने फैसला लिया है कि पूर्व दिव्यांग सैनिकों को पेंशन के रूप में प्रत्येक महीने १८ हजार की रकम दी जाएगी।

अमिताभ ने दिव्यांग बच्चों के साथ गाया राष्ट्रगान

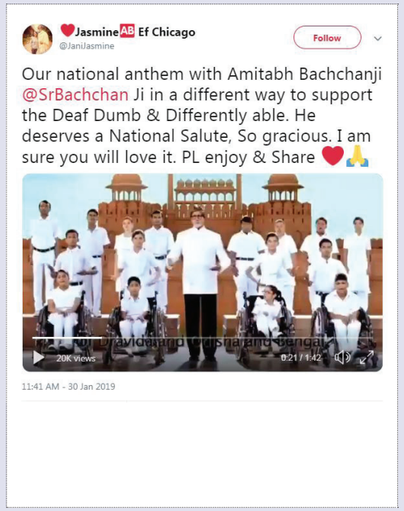

बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन ने दिव्यांग बच्चों के साथ राष्ट्रगान गाया है। अमिताभ ने ट्विटर पर अपने एक प्रशंसक का वीडियो साझा किया, जिसमें वह राष्ट्रगान गाते हुए नजर आए। अमिताभ ने लिखा है, "द नेशनल एंथम.. हमारा गौरव, हमारी पहचान, हमारी स्वतंत्रता , हमारा विश्वास, हमारा आत्मसम्मान है। लेकिन यह उन लोगों की आंखों में और भी बहुत कुछ है जो सुन या बोल नहीं सकते! मेरा सौभाग्य, मेरा सम्मान, मेरा भारत।"

गणतंत्र दिवस पर 'स्वीकार' दिव्यांग प्रणाली का शुभारंभ

गणतंत्र दिवस के अवसर पर नवी मुंबई मनपा मुख्यालय में महापौर जयवंत सुतार के हाथों नवी मुंबई मनपा के स्कूलों में विद्यार्थियों व अभिभावकों के बीच संवाद स्थापित करने के लिए स्मार्ट फोन पर आधारित 'NMMC Edu Smart' मोबाईल ऐप का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर दिव्यांग कल्याणकारी ईटीसी दिव्यांग शिक्षण प्रशिक्षण और सेवा -सुविधा केंद्र की ओर से अभिनव "स्वीकार" दिव्यांग पंजीकरण सिस्टम का भी शुभारंभ किया गया। शिक्षण अधिकारी संदीप संगवे ने बताया कि पालिका आयुक्त की संकल्पना से साकार किए गए इस मोबाइल एप्लिकेशन की मदद से नवी मुंबई मनपा के स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों से बेहतर संवाद स्थापित करने में मदद मिलेगी। इस ऐप पर सभी छात्रों की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी। अभिभावक घर बैठे ही अपने बच्चों की पढ़ाई, स्कूल में उपस्थिति - अनुपस्थिति की जानकारी देख सकते हैं। इसके अलावा परीक्षा का टाइम-टेबल भी इस ऐप पर उपलब्ध रहेगी।

इस ऐप के माध्यम से पालक और स्कूल का तालमेल बना रहेगा और सबके सहयोग से शैक्षणिक विकास किया जाएगा। इस अवसर पर, मनपा के ईटीसी केंद्र संचालक डॉ. वर्षा भगत ने बताया कि www.sweekar.in ऑनलाइन सिस्टम को शुरू किया गया है। इस ऐप की मदद से दिव्यांग व्यक्तियों को प्रमाणपत्र उपलब्ध किये जाने में सहायता मिलेगी।

दिव्यांग व्यक्तियों के लिए चलाई जानेवाली विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी भी उपलब्ध की जाएगी। इस ऑनलाइन सिस्टम से नवी मुंबई मनपा की हद में निवास करनेवाले दिव्यांग व्यक्तियों की एकत्रित जानकारी उपलब्ध होगी।

मंथन दिव्यांग कन्या सेवा संकुल

Apang Kanya Seva Sankul
MANTHAN
Managed By Menaba Cheritable Trust

दिव्यांग बेटियों को मिल रहा है उड़ने हेतु नया आसमान

‘मंथन’ यह मानवता एवं नारी विकास की दिशा में उठाया गया एक छोटा किन्तु बहुत ही सुंदर एवं महत्त्वपूर्ण कदम है। आज़ादी के ७० साल बाद भी हमारे समाज में जहाँ स्त्रियों को स्वयं के हक़, स्वतंत्रता एवं समानता के लिए लड़ना पड़ता है, वहाँ दिव्यांग, अनाथ एवं मंद बालिकाओं के विकास की तो बात सोचना ही असंभव सी लगती है। ऐसी कन्याओं को पूर्णरूप से विकसित होने की, शिक्षित होने की, स्वनिर्भर बनाकर इस जीवन के विशाल गगन में निर्भयतापूर्वक उड़ने का मौका देता है “मंथन”।

‘नीरू दीदी’ के नाम से जानी जाती निर्मलाबेन रावल एवं कन्याओं के प्यारे ‘मामा’ गिरिशभाई पटेल के प्रेम भरे अथाग प्रयत्नों एवं देखभाल की वजह से आज “मंथन” से गुजरात की सेंकडों दिव्यांग कन्याओंने उच्च शिक्षण के साथ-साथ स्वास्थ्य की देखभाल के अलावा खेल-कूद, संगीत-नृत्य, भरत-काम इत्यादि शिक्षा प्राप्त करके आत्मविश्वास पाया है और स्वनिर्भर बनी है। अनेक दिव्यांग, अनाथ, मानसिक रूप से क्षतिग्रस्त कन्याएं आज यहाँ शिक्षण, देखभाल एवं सर्वांगीण विकास की शिक्षा प्राप्त कर विकास की पगदंडी पर अपने कदम बढ़ा रही है।

“मंथन” की शरुआत वर्ष २०११ में गुजरात के गांधीनगर जिले के कलोल के पास ‘हाजीपुर’ नामक गाँव में हुई थी। मिट्टी की तीन झोंपड़ीयों एवं ग्यारह दिव्यांग कन्याओ के साथ शुरू की गई यह संस्था नीरूबहेन एवं गिरिशभाई के अथक प्रयासों, मेहनत एवं लगन से लोगो का विश्वास एवं मदद पाकर धीरे-धीरे विकास की राह पर चलते-चलते आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुकी हैं। जहाँ वर्तमान में ३०० से भी अधिक लकवाग्रस्त, दिव्यांग, द्रष्टिहीन, गूंगी-बहरी एवं मंदबुद्धि कन्याए शिक्षण

प्राप्त कर रही है। यहाँ उन्हें स्कूल एवं कोलेज की शिक्षा, निवास, भोजन, वस्त्र, पाठ्यपुस्तकें, नोटबुक्स, दवाइयाँ, मेडिकल देखभाल, सर्जरी, फिजियोथैरेपी उपचार सभी नि:शुल्क प्रदान किया जाता है। कक्षा १ से १० तक की पढ़ाई कन्याएं परिसर में ही स्थित प्राथमिक एवं माध्यमिक शाला में करती है। संस्था की कन्याओं के अलावा आस-पास के गाँवों की कन्याओं को भी यहाँ शिक्षण एवं कम्प्यूटर सीखने का मौका दिया जाता है। कक्षा ११-१२ एवं कोलेज की शिक्षा के लिए कन्याएं संस्था के वाहन में कलोल जाती है। इसके अलावा उन्हें यहाँ सिलाई, भरत काम एवं अन्य गृह उद्योगों की शिक्षा भी दी जाती है।

संस्था की तरफ से कभी कभार सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया जाता है। जिसमे सभी कन्याए अत्यंत उत्साहपूर्वक भाग लेती है और स्वयं के कौशल्य का प्रदर्शन करती है। संस्था के कंप्यूटर सेन्टर में इन कन्याओ को कंप्यूटर की आधुनिक टेक्नोलॉजी का ज्ञान भी दिया जाता है। संस्था के पास स्वयं की गौशाला है, जिसमे ८० गाय है एवं उन्हीं गायों का दूध कन्याओं को दिया जाता है। संस्था में प्रार्थना मंदिर, अतिथि गृह एवं आरोग्य केंद्र भी है, जिसकी स्वास्थ्य एवं उपचार सेवाओं का लाभ संस्था की कन्याओ के अलावा आस-पास के गाँव के लोगो भी मिलता है।

इन सब के अलावा “मंथन” द्वारा ‘मंथन नारी केंद्र’ भी चलाया जाता है। जो रिटायर्ड सीनियर सिटीज़न बहनें और कला-कौशल में हुनर प्राप्त बहनों के लिए बनाया गया है। जिससे वो शैक्षणिक, उपरोक्त बताई गई तमाम तथा संस्था की प्रवृत्तियों में यथायोग्य मार्गदर्शन, स्वेच्छा से सेवा कर संस्था की कन्याओ को एक माँ जेसा प्रेम एवं स्नेह दे सकें। नारी केंद्र की स्थापना का यही उद्देश था की इसी महिलाए एवं मंथन की सभी कन्या एक दूसरे का साथ पाकर दूसरे का पूरक बन सकें।

- ज्योति मोलासरिया धुप्पड

‘व्हीलचेयर मेरा सिंहासन है, और में रानी हूँ’: विराली मोदी

इन्डियन रेलवे को दिव्यांग अनुकूल बनाने की पिटीशन ने काफी लोगों का ध्यानाकर्षित किया था। जिसमे रेलवे मिनिस्टर सुरेश प्रभु का नाम भी शामिल है।

जिन्होंने ये अद्भुत पिटीशन की शरुआत की वह महिला का नाम विराली मोदी है। विराली मोदी एक दिव्यांग अधिकार के लिए लड़ने वाली सामाजिक कार्यकर्ता एवं पब्लिक स्पीकर है। वह बिना किसी असहजता के साथ अपनी व्हीलचेयर में बैठती है एवं अद्भुत आत्मविश्वास और मुस्कान को प्रदर्शित करती है।

जब उनको मलेरिया हुआ, तब साल २००६ में विराली अमेरीका में स्थायी थी। बाद की घटनाओंने उन्हें कोमा में धकेल दिया। केवल २३ दिन की अवधि में उन्हें ३ बार मृत करार भी दे दिया गया। उन्हें कार्डिआक एवं रेस्पिरेटरी अरेस्ट का सामना करना पड़ा, जिसकी वहज से उनका शरीर का तापमान ९० फेरनहेइट से भी कम हो गया था। उन्होंने काफी खून भी गवां दिया था जिसकी वजह से उनका हिमोग्लोबिन काफी नीचे चला गया था। सभी शक्यताए उनके खिलाफ थी लेकिन २९ सप्टेम्बर को उन्होंने फिर से आँख खोली जो की उनका जन्मदिन भी था।

वह फिर से जन्म लेने के समान था।

विराली अपनी जान बच जाने की वजह से काफी खुश थी लेकिन उनका कमर से नीचे का भाग पेरलाईझड़ हो चूका था। इस बात की वजह से उनको बेहद डिप्रेशन आ गया था। उन्होंने अपनी जान लेने तक की कोशिश की थी।

जब वह अच्छी ट्रीटमेंट की तलाश में २००८ में अमेरिका से इण्डिया स्थायी हुई तो इस घटनाने उनकी जिंदगी एक बिलकुल नया ही प्रकरण शुरू कर दिया।

व्हीलचेयर में होते हुए भारत में उनको काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। उन्हें मालूम पड़ा की ट्रेन पकड़ने जैसा सामान्य काम भी कितना कठिन है। निरालीने रेलवे ट्रान्सपोर्ट को अधिक अनुकूल बनाने के लिए कुछ करने का निर्णय किया।

वर्तमान में २७ साल की निराली ने Change.org इन्डियन रेलवे को दिव्यांग अनुकूल बनाने के लिए शुरू किए गए पिटीशन को २,२१,००० से ज्यादा लोगों के हस्ताक्षर प्राप्त हो चुके है। रेलवे मिनिस्टर सुरेश प्रभुने सभी रेलवे स्टेशन को दिव्यांग अनुकूल बनाने का वचन दिया एवं चेन्नई, एर्नाकुलम, कोच्ची और थ्रिस्सुर जैसे स्टेशनने भी उत्तर देते हुए दिव्यांग अनुकूल इन्फ्रास्ट्रक्चर शुरू किए।

“उन्होंने आराम-कक्ष एवं शौचालय को दिव्यांग अनुकूल बनाया है। उन्होंने छोटे रेम्प एवं व्हीलचेयर की संख्या में भी इजाफ़ा किया। अभी हाल ही में उड़ीसा एवं हैदराबाद में एक-एक ट्रेन को भी दिव्यांग अनुकूल बनाया गया है।”

विराली शैक्षणिक संस्थाओ में भी अपने सेमिनार करती है। ऐसे ही किसी कार्यक्रम के दौरान जब किसी श्रोता ने उनसे पूछा की तकलीफ़ के समय में परिवार के लोगों के आलावा किसने आपको सबसे ज्यादा प्रोत्साहित किया। तो विराली के पास काफी चौका देने वाला जवाब था - बोलीवुड अभिनेत्री बिपाशा बासु। विराली कहती है, ‘वह श्यामरंग है, काफी अपमान का सामना भी करती है, लेकिन हर समय वो खुद के प्रति प्रेम को ही बढ़ावा देती है। यह चीज़ सबसे महत्वपूर्ण है। मुजे खुद के प्रति प्यार करना सीखना होगा, और अब की जब में ये करती हूँ तो में कह शक्ति हूँ के ये व्हीलचेयर मेरा सिंहासन है, और में एक रानी। और किसी के पास ऐसा अधिकार नहीं है की मुझे इससे विपरीत कुछ बोल सके।’

जब सूरत के दिव्यांगने पाँव से मोदी-हिराबा का चित्र बनाया

सूरत के डिंडोली में रहते मनोज भिंगारे के पास दोनों हाथ नहीं है जिसके बावजूद वह अपने सब कार्य खुद से ही कर लेते है। इन सबके अलावा मनोज एक काबिल चित्रकार भी है।

मनोज भिंगारे अपने पाँव की मदद से अच्छी चित्रकला कर लेते है। अपने पैर से पेन्सिल चला के पहले तो कोई भी चित्र को वे कागज़ पर उतार लेते है बाद में उसमे रंग भर देते है। मनोज ने इसी तरह प्रधानमंत्री मोदी अपनी माता के साथ बैठे हो ऐसा चित्र बनाया था। वह खुद मिल के प्रधानमंत्री को यह चित्र देना चाहते थे और उनका ये सपना पूरा भी हुआ। मनोज भाजपाई सांसद की मदद से अपने बाकी ७ साथियों के साथ प्रधानमंत्री कार्यालय पहुंचे तब, प्रधानमंत्री अपनी कुर्सी छोड़ कर खड़े हो गए और यह दिव्यांग को गले लगा लिया।

मनोज ने जब ये चित्र दिया जिसमे प्रधानमंत्री अपनी माँ के साथै बैठे है, उसे देखकर मोदी भी चकित रह गए। वह मनोज को गले लग गए और जमकर उनकी तारीफ़ की।

सूरत निवासी मनोज के लिए मुंह और पैर से पेन्टिंग करना शुरू-शुरू में काफी कठिन था, परन्तु हिंमत हारे बिना वह मेहनत करते गए और उनकी मेहनत रंग लाई। मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब भी मनोज ने उनको एक पेन्टिंग भेट दिया था। मनोज बचपन से ही दिव्यांग नहीं थे लेकिन एक अकस्मात के बाद उनको अपने दोनों हाथ कटवाने पड़े थे। मनोज की शादी ६ साल पहले भावना के साथ हुई थी। मनोज के काममें उनकी पत्नी भावना एवं माता-पिता भी सहायता करते है।

प्रधानमंत्री मोदी से मिलना कोई सामान्य मानवी के बस की बात नहीं है इसीलिए जब ये ८ सदस्यों का गुट प्रधानमंत्री को मिलके सूरत वापिस लौटा तो उनका काफी धूमधाम से स्वागत किया गया। इस टीम के साथ उनको प्रधानमंत्री से मिलने ले जाने वाले कामरेज के धारासभ्य वि.डी.झालावड़िया भी सम्मिलित थे।

प्रधानमंत्रीजी मनोज के चित्र को इत्मिनान से देखते हुए

मानसिक दिव्यांग बच्चों की पंचतीर्थ यात्रा

जैन सम्प्रदाय में पंच तीर्थयात्रा का काफ़ी महत्त्व है। एक ही दिन में पांच जैन तीर्थधाम के दर्शन करने को पंच तीर्थयात्रा कहते है। ऐसी ही एक यात्रा जैन दाताओं के सहयोग से तारीख १८-१९ फरवरी, शुक्रवार-शनिवार को मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कुल फॉर मेन्टली चेलेंज्ड के ४० जितने छात्रों के लिए आयोजित की गई थी। जिसमे १८ तारीख, शुक्रवार को मीरपुर, पावापुर, भेरुतारक, केवलधाम एवं जिरावाला ऐसे पांच तीर्थधामो को संमिलित किया गया था। रात्रि निवास जिरावाला में आयोजित किया गया था और १९ तारीख, शनिवार को अंबाजी एवं तारंगा तीर्थधामो की यात्रा करके अहमदाबाद ये तीर्थयात्रा वापिस आई थी। दो दिन की यह यात्रा छात्रों के लिए काफ़ी आरामदायक एवं आनंदमयी रही थी। जैन दाताओने भोजन एवं रात्रि निवास का भी अत्यंत शानदार आयोफर किया था।

यह यात्रा नि:शुल्क रूप से करवाई गई थी। दिव्यांग बच्चो द्वारा बस में डांस भी किया गया था। रात्रि निवास दरमियान भजन-अन्ताक्षरी का आनंद भी बच्चों ने लिया था।

पंचतीर्थ यात्रा छात्रो के लिए काफ़ी प्रेरणादायी साबित हुई। जैन छात्रो की मात्र कम होने के बावजूद सभी ज्ञाति के छात्रो के यात्रा में संमिलित किया गया था। समाज, सेवाभावी संस्थाओ एवं दाताओ की तरफ से इस प्रकार की यात्रा को सहयोग मिल जाता है। समाज दिव्यांगो के प्रति क्रमशः जागृत बन रहा है उसका ये सबसे अच्छा दाखिला है।

विद्यालय के कर्मचारियोंने संस्था स्थापना दिन का जश्न मनाया

यह एक सच्चाई है की जब संस्था के कर्मचारी तन, मन एवं धन से संस्था के कार्यो जुड़ जाते है तो उस संस्था के विकास को कोई नहीं रोक सकता। सातवाँ पगारपंच मिलने की ख़ुशी में मेमनगर गाँव, अहमदाबाद में स्थित नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ. हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कुल फॉर मेन्टली चेलेंज्ड के कर्मचारिओने संस्था के २७वे स्थापना दिन का उत्सव ९५ बच्चों के साथ मनाया। मानसिक दिव्यांग बच्चों के हाथ से केक कटिंग करवा के स्थापना दिन मनाया गया था। और साथ-साथ सभी दिव्यांग बच्चों को उनकी तस्वीर वाली प्रिन्टेड टी-शर्ट तोहफ़े के तौर पर दी गई थी। सभी ट्रस्टियों को रमेश तन्ना लिखित 'समाज का उजाला' पुस्तक भेट किया गया था। इस पुस्तक में संस्था की जानकारी वाला सुन्दर लेख होने की वजह से ये पुस्तक भेट दी गई। इस अवसर पर संस्था के वार्षिक अहेवाल का विमोचन भी मेनेजिंग ट्रस्टी डॉ. सुभाष आप्टे द्वारा किया गया था।

कर्मचारी मात्र एक कर्मचारी न रहकर जब संस्था के परिवार का हिस्सा बनता है तब ही एसे कार्यक्रम संभव होते है। बच्चे टी-शर्ट देख के काफ़ी खुश हुए थे। केक-डांस-दोसा-गिफ्ट बच्चों को स्थापना दिन के अवसर पर कर्मचारियों द्वारा अर्पण की गई थी।

१६ फरवरी को विद्यालय की दिव्यांग विद्यार्थिनी के हाथों से ध्वजवंदन किया गया

राज्य में २६ फरवरी, प्रजासत्ताक दिन के उत्सव को एकदम जोरशोर से मनाया गया। जिसमें राज्य के सभी विद्यालयों को भी शामिल किया गया है। इस बार अभ्यास कर रही दिव्यांग छात्राओं के हाथों ध्वजवंदन करवाने का फैसला किया गया। अगर विद्यालय में दिव्यांग विद्यार्थिनी हो तो उसे प्राथमिकता देने का फैसला किया गया। पर जो कोई दिव्यांग विद्यार्थिनी न हो तो फिर गाँव की सबसे ज्यादा शिक्षित विद्यार्थिनी के हाथों से ध्वजवंदन कराने का फैसला हुआ।

इस कार्यक्रम अंतर्गत २२ फरवरी से छात्राओं को आमंत्रण देने का सुचन किया गया। इसके आलावा कार्यक्रम के लिए गाँव की सबसे शिक्षित छात्रा अगर गाँव में रहती हो तो उसे आमंत्रण देकर मुख्य अतिथि बनाने का प्रावधान भी किया गया है। विद्यालय में कोई विकलांग विद्यार्थिनी हो तो उसे प्रथम पसंदगी देने की सुचना भी दी गई। कार्यक्रम के लिए दस दिन पहले से ही गाँव के नोटिस बोर्ड, लाउडस्पीकर और एनी माध्यमो द्वारा कार्यक्रम का प्रचार किया गया। कार्यक्रम के असरकारक आयोजन के लिए जिल्ला कक्षा के अन्य अधिकारियों को तालुका का प्रभारी बनाने का प्रावधान किया गया था।

दिव्यांग महापसंदगी संमेलन

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा एप्रिल,२०१९ में विकलांग व्यक्तिओ के लिए महापसंदगी सम्मेलन का आयोजन किया गया है। जिसमे दिव्यांग, मूकबधिर एवं अंधजन दिव्यांग युवक - युवतियाँ फॉर्म भर कर इस संमेलन में हिस्सा ले सकते है। यह फॉर्म ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट की हाउस नं-४८/डी, सुमेल-५, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रिज के पास, चमनपुरा, असरवा, अहमदाबाद स्थित ऑफिस से इतवार के सिवाय सुबह ११:०० से शाम ०५:०० के दरमियान प्राप्त कर सकते है। यह फॉर्म आप १५-२-२०१९ तक प्राप्त करके नीचे दिए गए दस्तावेज के साथ १५-३-२०१९ तक जमा करवा सकते है।

दस्तावेज की यादी

(1) आधार कार्ड (2) फर्म का दाखिला (3) स्कुल लिविंग सर्टिफिकेट
(4) एस.टी कार्ड (5) २ पासपोर्ट साइज फोटो

दिव्यांग मन की बात

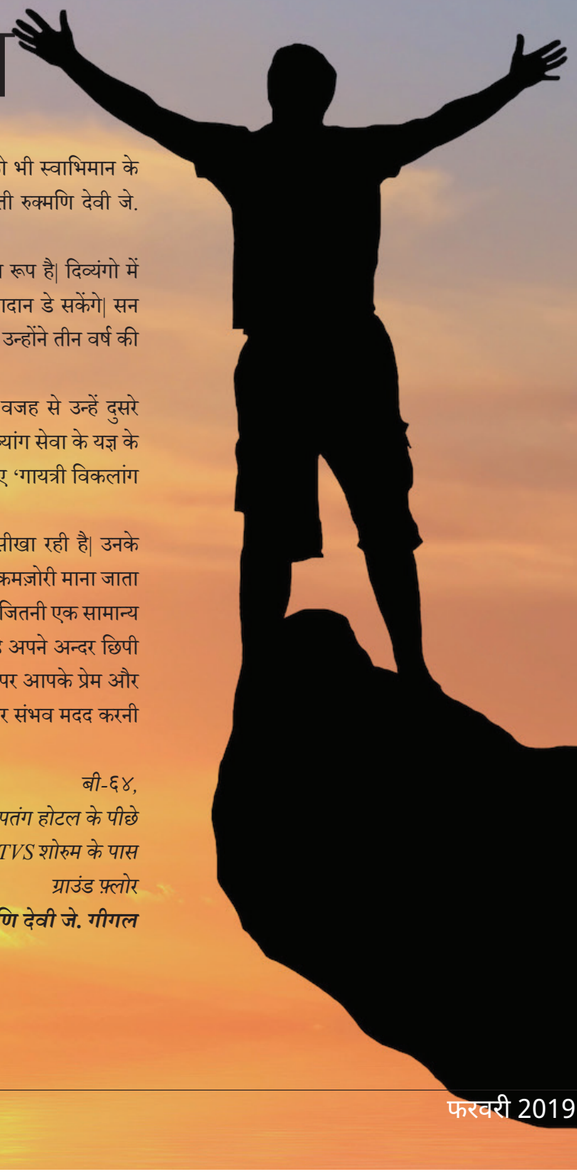

एक स्वस्थ एवं समर्थ देश की आकांक्षा रखते हुए दिव्यंगो को भी स्वाभिमान के साथ जीना सिखा रही है- गायत्री विकलांग मानव मंडल की श्रीमती रुक्मणि देवी जे. गीगल|

रुक्मणि जी के अनुसार दिव्यांग सेवा, प्रभु सेवा का ही दूसरा रूप है| दिव्यंगो में आत्मविश्वास जगेगा, तब ही वह देश की तरक्की में भी अपना योगदान डे सकेंगे| सन १९५१ में राजस्थान में जन्मी रुक्मणि देवी जन्म से ही दिव्यांग थी पर उन्होंने तीन वर्ष की उम्र में अपने पैरो पर लडखडाते ही सही, पर चलना सिख लिया |

संघर्षो और अभावो में अपना ज्यादातर जीवन गुजारने की वजह से उन्हें दुसरे दिव्यंगो की पीड़ा का भी आभास हुआ और उन्होंने अपना जीवन दिव्यांग सेवा के यज्ञ के लिए समर्पित कर दिया और सन १९९४ में दिव्यांगों की मदद के लिए 'गायत्री विकलांग मानव मंडल' की स्थापना की|

आज रुक्मणि देवी दिव्यांगों को स्वाभिमान के साथ जीना सीखा रही है| उनके अनुसार समाज में दिव्यांगों या शारीरिक रूप से दुर्बल व्यक्ति को एक कमज़ोरी माना जाता है, पर ऐसा नहीं है| ईश्वर की उस व्यक्ति पर भी उतनी ही कृपा रहती है, जितनी एक सामान्य व्यक्ति पर| बस उन्हें थोड़ी सी मदद की, हमारे प्रेम की जरुरत रहती है अपने अन्दर छिपी कला को उभारने के लिए| दिव्यांगों को आपकी सहानुभूति की नहीं, पर आपके प्रेम और सम्मान की जरुरत है और हमें दिव्यांगों को मार्ग-दर्शन देकर उनकी हर संभव मदद करनी चाहिए|

बी-६४,
पतंग होटल के पीछे
TVS शोरुम के पास
ग्राउंड फ़्लोर
रुक्मणि देवी जे. गीगल

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

रजी. श्व: २४३९ स्था : ०७/०३/१९९५

मानव सेवा वही प्रभु सेवा

गायत्री विकलांग मानव मंडल वडोदरा
दशम सर्वज्ञाति समुह लग्नोत्सव

लग्न इच्छुकों को नाम नामांकित करने की नम्र बिनती ।
आपके सगे-संबंधी और कोइ रिश्तेदार को बता के नाम नामांकित कराने की बिनती ।

गायत्री विकलांग मानव मंडल (वडोदरा) तरफ से

समुह लग्नोत्सव

का आयोजन किया हुआ है ।
यह लग्नोत्सव मे सर्व ज्ञाति के लडकें-लडकियां को नाम दर्ज करा सकते है ।
विकलांग (दिव्यांग) भाइ-बहन और
अन्य कोइ भी गरीब लडके-लडकिया तथा
मंगनी किये हुए को जल्द से जल्द नाम नामांकित कराये
नाम दर्ज कराने के लिये चूंटणीकार्ड, राशनकार्ड, आधारकार्ड,
२ फोटो लाना जरुरी है ।

शादी में कम खर्च करो, माता-पिता को ज्यादा
खर्च करके कर्जदार न बनाए ।
नामांकित करने की
अंतिम तिथी ३१/०३/२०१९ रहेगी
शुभलगन तारीख : २८/०४/२०१९
को रविवार का दिन तय किया है
शुभस्थल : गायत्री विकलांग मानव मंडल,
उर्मि स्कुल के सामने, समा, वडोदरा
रुक्षमणीबेन जे. शाह
९४२९७५७६३४, ९१६५४२६५८२